DR. LALIT SAGAR
B.A-1
PAPER-1
UNIT-5

(i) लेब्राडोर द्रोणी → उत्तर में ग्रीनलैण्ड के लगभग तट तथा द० में न्यूफाउंडलैण्ड उभार के बीच 4000 m. की गहराई तक 40°–50° उत्तरी अक्षांशों के बीच फैली है।

(ii) उत्तरी अमेरिका द्रोणी → उ० आंध्र महासागर की सबसे बड़ी द्रोणी है। इसका विस्तार 12°–40° उत्तरी अक्षांशों के मध्य उत्तरी अमेरिका के तट से 55° प० देशान्तर के बीच 5000 मी० की गहराई तक पाया जाता है।

(iii) ब्राजील द्रोणी → द० अटलांटिक महासागर में मध्य रेखा से 30° द० अक्षांश तक तथा द० अमेरिका के तट तथा पारा उभार के बीच स्थित है।

(iv) स्पेनिश द्रोणी → मध्य अटलांटिक कटक के पूर्व में आइबेरियन प्रायद्वीप के पास स्पेनिश द्रोणी का विस्तार 30°–50° N अक्षांशों के बीच 5000 मी० की गहराई तक है।

(v) उ० तथा द० कनारी बेसिन :→ दो वृत्ताकार द्रोणियों से मिलकर बनी है, जिसका विभाजन उच्च भाग द्वारा होता है।

(vi) केपवर्डे द्रोणी → मध्य अटलांटिक कटक तथा अफ्रीका के मध्य 10°–23.5° N अक्षांशों के मध्य 5000 मीटर की गहराई तक विस्तृत है।

(vii) गायना द्रोणी → गायना कटक तथा सियरा लियोन के मध्य उ० प० से द० पू० दिशा में 4000–5000 मीटर की गहराई तक विस्तृत है।

(viii) अंगोला द्रोणी → अफ्रीका के तट से प्रारंभ होकर उ० पू० से द० प० दिशा वालविस कटक तक 5000 मीटर की गहराई तक फैली है।

(ix) केप बेसिन → 25°–45° द० अक्षांशों के मध्य अफ्रीका के प० में स्थित है।

(x) अगुलहास द्रोणी → उत्तमाशा अंतरीप के द० में 40°–50° द० अक्षांश के मध्य इसका विस्तार अधिक पाया जाता है।

④ महासागरीय गर्त :→

आंध्र महासागर के तटों के सहारे अग्निम वलन की अनुपस्थिति के कारण गर्त कम पाए जाते हैं। मरे के अनुसार 3000 फैदम से अधिक गहरे 19 गर्त पाए जाते हैं। इनमें प्रमुख हैं – नेरेस गर्त, पोर्टोरिको गर्त, नाविसिया, बुमान, मौसले, हुन आदि।

(5) सीमांत सागर :-

आंध्र महासागरों के सीमांत सागरों में रूम सागर, कैरीबियन सागर, मैक्सिको की खाड़ी, बाल्टिक सागर, उत्तरी सागर, बैफिन की खाड़ी, आदि प्रमुख हैं।

Scanned by CamScanner

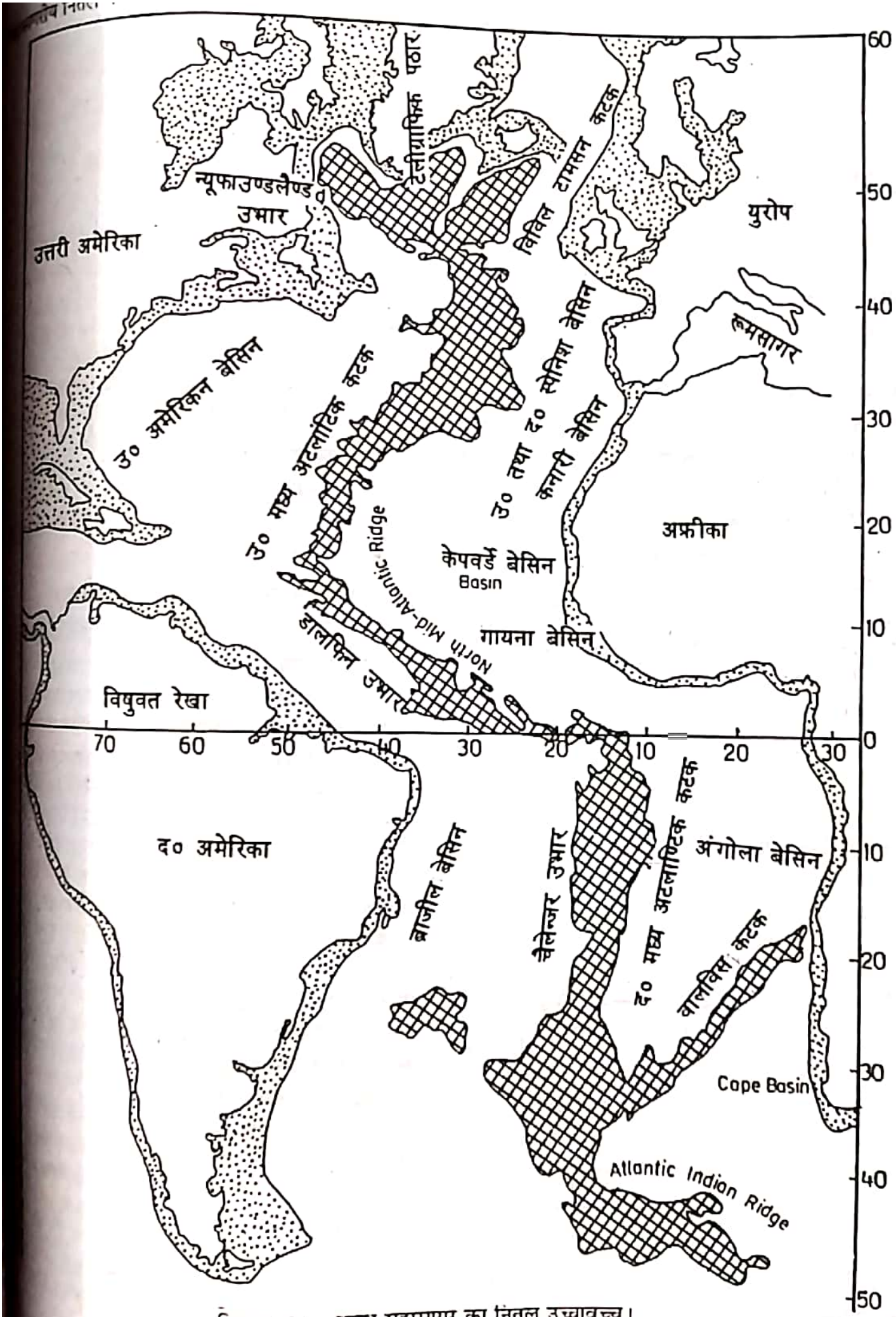

चित्र 24.2 : आन्ध्र महासागर का नितल उच्चावच्च।

Scanned by CamScanner